

**काठक** पुं. (तत्.) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

**काठ-कबाड़** पुं. (देश.) 1. लकड़ियों के टूटे-फूटे टुकड़े 2. उपयोगी लकड़ी 3. वह सामान जो बेकार हो गया हो, टूटा-फूटा सामान।

**काठनीम** पुं. (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिसे गंधेल भी कहते हैं दे. गंधेल।

**काठबेल** स्त्री. (देश.) इन्द्रायन की तरह की एक बेल जो हिंदुस्तान के शुष्क प्रदेश और अफगानिस्तान में होती है, जिसके बीज से तेल निकलता है और जलाने के काम आता है।

**काठमांडू** पुं. (तद्.) नेपाल की राजधानी जिसका नाम काठ के मकान अधिक होने से पड़ा।

**काठिन्य** पुं. (तत्.) कड़ापन, सख्ती।

**काठियावाड़** पुं. (तद्.) भारत क्षेत्र के गुजरात प्रदेश का पश्चिमी भाग जो कच्छ की खाड़ी और खंभात की खाड़ी के बीच में है।

**काठी** स्त्री. (देश.) 1. घोड़े की पीठ पर कसने की जीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है 2. ऊँट की पीठ पर रखने की काठ युक्त गद्दी 3. काठ की म्यान जिस पर चमड़ा या कपड़ा चढ़ा रहता है (तद्.) शरीर की गठन, कदकाठी।

**काड़ी काँवर** पुं. (देश.) वह काँवर जिसे मार्ग में कभी भूमि पर नहीं रखा जाता, कंधे या लकड़ी पर ही रखते हैं।

**काढ़ना** स.क्रि. (तद्.) 1. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर निकालना 2. खोल कर दिखाना 3. किसी वस्तु से अलग करना 4. लकड़ी, पत्थर, कपड़े आदि पर तेल बूटे बनाना उकेरना जैसे-वेल बूटा काढ़ना, कसीदा काढ़ना 5. उधार लेना जैसे-कहीं से काढ़ कर पैसे दे दो 6. कड़ाहे में से पकाकर निकालना जैसे- पूड़ी काढ़ना, जलेबी काढ़ना।

**काढ़ा** पुं. (देश.) औषधियों को पानी में उबाल कर बनाया हुआ शर्बत, जोशाँदा, क्वाथ।

**काण्व** पुं. (तत्.) 1. कण्व का वंशज 2. कण्व का अनुयायी।

**कातंत्र** पुं. (तत्.) कलाप व्याकरण जिसे कार्तिकेय की कृपा से सर्ववर्मा ने बनाया था।

**कात** पुं. (तद्.) 1. एक प्रकार की कैंची जिससे गड़रिये भेड़ों के बाल काटते हैं 2. मुर्गे के पैर का कांटा।

**कातना** स.क्रि. (तद्.) 1. रूई से सूत बनाना 2. ढेर से सन या मूँज आदि की रस्सी बनाना मुहा. महीन कातना- बहुत कुशलता से गढ़ कर बातें करना।

**कातर** वि. (तत्.) 1. अधीर, व्याकुल 2. डरा हुआ, भयभीत 3. डरपोक 4. आर्त, दुःखित।

**कातरता** स्त्री. (तत्.) 1. अधीरता 2. दुख की व्याकुलता 3. डर।

**कातरोक्ति** स्त्री. (तत्.) 1. दुख या संकट में कही जानेवाली दीनतायुक्त बात 2. विनती 3. विवशता, लाचारी।

**काता** पुं. (तद्.) बाँस काटने या छीलने की छुरी।

**कातिक** पुं. (तद्.) वह महीना जो शरद ऋतु में क्वार के बाद पड़ता है, कार्तिक।

**कातिब** पुं. (अर.) लिखनेवाला, लेखक।

**कातिल** पुं. (अर.) 1. वध करनेवाला मनुष्य, हत्यारा 2. प्राण लेनेवाला, घातक।

**काती** स्त्री. (तद्.) 1. कैंची 2. सुनारों की कतरनी 3. चाकू, छुरी 4. छोटी तलवार, कत्ती।

**कात्यायन** पुं. (तत्.) 1. कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न ऋषि जिनमें तीन प्रसिद्ध हैं-एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वररुचि कात्यायन 2. एक बौद्ध आचार्य 3. पालि व्याकरण के कर्ता एक बौद्ध आचार्य जिन्हें पालि ग्रंथों में 'काच्चायन' कहते हैं।

**कात्यायनी** स्त्री. (तत्.) 1. कत गोत्र में उत्पन्न स्त्री 2. कात्यायन ऋषि की पत्नी 3. कषाय वस्त्र धारण करनेवाली अर्धेड विधवा स्त्री 4. कल्पभेद से कत गोत्र में उत्पन्न एक दुर्गा 5. याज्ञवल्क्य ऋषि की पत्नी 6. पार्वती।